

सधु घाटी लपि की समझ

प्रलिमिंस के लयि:

[सधु घाटी सभयता](#), [कृतरमि बुद्धमितता](#), सधु घाटी लपि, बौस्ट्रोफेडन शैली ।

मेन्स के लयि:

प्राचीन भारतीय सभयताएँ, प्राचीन भारत में भाषा का विकास, प्राचीन लपियों को समझना

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में तमलिनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालनि ने **सधु घाटी सभयता की हड़प्पा (सधु घाटी) लपि** को सफलतापूर्वक समझने वाले व्यक्ति को 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का पुरस्कार देने की घोषणा की ।

- इससे हड़प्पा लपि के सदियों पुराने रहस्य पर प्रकाश पड़ा, जिसका अर्थ समझने के लिये विद्वानों द्वारा 100 से अधिक प्रयास किए गए लेकिन वे सफल नहीं हो सके ।

नोट: समझ से तात्पर्य अज्ञात प्रतीकों या लपियों को पठनीय भाषा में अनुवाद करने की प्रक्रिया से है

सधु घाटी लपि क्या है?

- **परचिय:** सधु घाटी सभयता (2600-1900 ईसा पूर्व) के दौरान वर्तमान पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत में प्रयुक्त सधु घाटी लपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है ।
 - इस लपि की खोज वर्ष 1920 के दशक में **सर जॉन मार्शल के नेतृत्व** में की गई थी । यह **मुहरों, टेराकोटा की पट्टियों एवं धातु पर** अंकित है जिसमें **चित्रलेख** तथा **पशु या मानव आकृतियाँ** हैं ।
- **लेखन शैली:** सामान्यतः दाएँ से बाएँ लिखे गए लंबे वाक्यों में कभी-कभी बौस्ट्रोफेडॉन लपि (पंक्तियों के बीच दशाओं का परिवर्तन) का प्रयोग किया गया है ।
- **संक्षिप्त लेख:** अधिकांश लेख छोटे (औसतन 5 अक्षर) हैं सबसे लंबे ज्ञात टेक्स्ट में **26 प्रतीक** हैं ।
 - इसकी संक्षिप्तता के कारण इस बात पर विमर्श है कि क्या यह एक पूर्ण विकसित भाषा की परिचायक है या यह केवल प्रतीकात्मक संकेतन है ।
- **लपि की प्रकृति:** संभवतः एक **लोगोग्राफिक प्रणाली** (जिसमें चित्रलेखों तथा अक्षरों का संयोजन था) पर आधारित थी, जो अपने समय की अन्य लपियों के समान थी ।

- इस संदर्भ में विद्वानों ने रबिस सिद्धांत को प्रस्तावित किया है जहाँ प्रतीक अपरत्यक्ष रूप से ध्वनियों या वचिरों के परिचायक हैं ।

- **उद्देश्य और कार्य:** इस लपि का उपयोग व्यापार, कर अभिलेखों एवं पहचान के लिये किया जाता था लेकिन इसकी भूमिका अभी भी अस्पष्ट है । गुणज, जोड़ एवं स्वास्तिक जैसे कुछ प्रतीकों का शैक्षिक या धार्मिक महत्त्व भी हो सकता है ।

- कुछ लोगों का मानना है कि यह एक अंकन प्रणाली थी, न कि कोई भाषा-आधारित लपि ।

- इसकी भाषा के बारे में सिद्धांत:

- **द्रविड परकिलपना:** यह **असको परपोला** और भारतीय शोधकर्ता **इरावतम महादेवन** द्वारा समर्थित है ।

- इसमें दावा किया गया है कि इस लिपि का आधार **द्रवडि** है एवं इसका संबंध प्राचीन तमिल से है।
- **उदाहरण:** परपोला का सुझाव है कि सिंधु लिपि में 'मछली' का प्रतीक **"मीन"** का **परचायक** है जिसका **द्रवडि भाषाओं में अर्थ "मछली" और "तारा"** दोनों ही होता है, जो पुरानी तमिल शब्दावली के अनुरूप है।
 - ऐसा माना जाता है कि कुछ 'संख्या + मछली' अनुक्रम द्वारा तारा समूहों को संदर्भित किया गया है, हालांकि यह अभी भी अप्रमाणित है।

SIGN	IDENTIFICATION	READING	MEANING
a 	fish	<i>mīn</i>	1. fish 2. star
b 	3 + fish	<i>mu(m) mīn</i>	three stars (Mrigasiras)
c 	6 + fish	<i>caru mīn</i>	six stars (Pleiades)
d 	7 + fish	<i>elu mīn</i>	seven stars (Ursa Major)

- **संस्कृत से जुड़ाव:** एसआर राव जैसे प्रारंभिक विद्वानों ने इस लिपि को **संस्कृत से जोड़ते हुए इसे वैदिक काल (1500-600 ईसा पूर्व)** से संबंधित बताया।
 - **हड़प्पा एवं वैदिक संस्कृतियों के बीच समयरेखा में विसंगति** के कारण इस सिद्धांत पर विवाद हुआ है।
- **गैर-भाषाई प्रतीक:** स्टीव फारमर और पैगी मोहन जैसे आलोचकों का तर्क है कि ये प्रतीक कोई भाषा नहीं थे बल्कि **राजनीतिक, आर्थिक या धार्मिक चिह्नों** से संबंधित की एक प्रणाली का हिस्सा थे।

नोट:

- **लिपि:** यह किसी भाषा के शब्दों को दर्शाने के लिये प्रतीकों या वर्णों का प्रयोग करके लिखने की एक प्रणाली है जैसे लैटिन, देवनागरी या सिंधु लिपि।
- **भाषा:** यह अर्थ संप्रेषित करने के लिये ध्वनियों, शब्दों एवं व्याकरण का प्रयोग करने वाली संचार प्रणाली है जैसे अंग्रेजी, हिंदी या तमिल।

परिचय

- 'वास्तु' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द वस से हुई है, जिसका आशय बसने या रहने से है। 'स्थापत्य' शब्द वास्तु का पर्यायवाची है। कला की भाँति 'वास्तु या स्थापत्य कला' के उद्भव एवं विकास का इतिहास भी उनका ही प्राचीन है, जितना की मानव सभ्यता का।
- हड़प्पा सभ्यता भारतीय संस्कृति की लंबी एवं वैविध्यपूर्ण कहानी का प्रारंभिक बिंदु है।
- इसका कालखंड लगभग 3000 ई.पू. से 2000 ई.पू. के बीच है।
- भारतीय वास्तुकला के प्राचीनतम नमूने हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़, कालीबंगन, लोथल और रंगपुर आदि से पाए गए हैं।

सिंधुकालीन स्थापत्य की विशेषताएँ

- हड़प्पाई नगर 'ग्रिड पैटर्न' के तहत बनाए गए हैं अर्थात् आयताकार खंड में विभाजित नगर, जहाँ सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं।
- विशाल सड़कें नगर को अनेक खंडों में विभाजित करती थीं जबकि छोटी सड़कों का उपयोग अलग-अलग स्थानों पर स्थित घरों और बहुमंजिली इमारतों को जोड़ने के लिये किया गया था।

- उत्खनन स्थल पर मुख्यतः तीन प्रकार के भवन पाए गए हैं- सार्वजनिक भवन और सार्वजनिक स्नानागार तथा निवास गृह।
- भवन निर्माण के लिये हड़प्पा के लोग मानकीकृत आधाम वाली पक्की ईंटों का उपयोग करते थे।
- ईंटों को जियाम के गारे का उपयोग करके एक साथ जोड़ा जाता था।
- नगरीय क्षेत्र को हिस्सों में बाँटा था- गढ़ी क्षेत्र अर्थात् पश्चिमी टीला तथा पूर्वी टीला या निचला नगर।
- पश्चिमी भाग में ऊँचाई पर स्थित गढ़ी का उपयोग विशाल आयामों वाले भवनों, जैसे- अनागार, प्रशासनिक भवन, संभों वाला हॉल और जीपन आदि के लिये किया जाता था।
- गढ़ी में स्थित कुछ भवन संभवतः शासकों और अभिजात वर्गों के आवास थे।
- अनागार वायु संचार वाहिकाओं और ऊँचे चतुरंगों के साथ निर्मित किये गए हैं। इससे अनाज भंडारण में मयद के साथ ही कीटों से उनकी रक्षा करने में भी सहायता मिलती थी।
- हड़प्पाई नगरों की एक प्रमुख विशेषता सार्वजनिक स्नानागारों का प्रचलन था। इससे उनकी संस्कृति में कर्मकांडीय पवित्रता के महत्त्व का संकेत मिलता है।

- इन स्नानागारों के चारों ओर दीवारों और कक्षों का समूह था। सार्वजनिक स्नानागारों का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण मोहनजोदड़ो के उत्खनित अवशेषों में 'बृहत स्नानागार' है। इसमें किसी वरार या रिस्वाव का न होना हड़प्पा सभ्यता की अभिव्यक्तिकी कुशाग्रता का परिचायक है।
- नगर के निचले भाग में एक कक्षीय छोटे भवन पाए गए हैं। इनका उपयोग संभवतः श्रमिक वर्ग के लोगों द्वारा आवास के लिये किया जाता था।
- कुछ घरों में सीढ़ियाँ भी थीं जिससे संकेत मिलता है कि संभवतः कुछ भवन दो मंजिला रहे होंगे।
- अधिकांश भवनों में कूर्च तथा स्नानगृह थे और वायु संचार की उचित व्यवस्था थी।
- हड़प्पाई स्थापत्य की प्रमुख विशेषता, 'उन्नत जल निकास' व्यवस्था थी।
- प्रत्येक घर से निकलने वाली छोटी नालियाँ मुख्य सड़क के साथ-साथ चलने वाली बड़ी नालियों से जुड़ी थीं।
- नियमित साफ-सफाई और रख-रखाव के लिये नालियों को आंशिक रूप से ढका गया था।
- उचित दूरी पर मलकुंड (सिस्पिट) बनाए गए थे।
- व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों प्रकार की स्वच्छता पर ध्यान दिया गया था। इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता पहली सभ्यता थी जहाँ स्वच्छता को प्राथमिकता दी गई।



सधु घाटी लिपि को समझने में क्या चुनौतियाँ हैं?

- **द्विभाषी ग्रंथों का अभाव:** प्राचीन लिपियों को समझना अक्सर **द्विभाषी ग्रंथों पर निर्भर** करता है जैसे रोसेटा स्टोन, जिससे **मसिर की चत्तिरलिपि का ग्रीक अनुवाद** मिला।
 - हालाँकि, सधु लिपि में ऐसे तुलनात्मक अभिलेखों का अभाव है जिससे प्रतीकों को ध्वनियों या अर्थों से जोड़ना कठिन हो जाता है।
 - **वर्ष 1799 में नील डेल्टा** के पास खोजे गए रोसेटा स्टोन में **ग्रीक, डेमोटिक तथा चत्तिरलिपि** में लिखा संदेश मिला। इससे वद्वानों को प्राचीन **मसिर की चत्तिरलिपि** को समझने में मदद मिली।
- **संक्षिप्त एवं खंडित लेख:** अधिकांश लेख संक्षिप्त हैं, जिनमें प्रतीक औसतन पाँच अक्षर हैं।
 - **लंबे लेखों की कमी से व्याकरण, वाक्य वनियास या भाषाई व्याख्या** में प्रयुक्त पैटर्न का विश्लेषण करने की क्षमता सीमित हो जाती है।
- **अज्ञात भाषा:** इस लिपि से संभवतः ऐसी भाषा का प्रतनिधित्व होता है जिसका कोई समानांतर न न होने से इसका तुलनात्मक अध्ययन करना कठिन हो जाता है।
 - इस संदर्भ में सदिधांतों द्वारा इसके **द्रवडि, इंडो-आर्यन** या लुप्त भाषा समूह से जुड़े होने का सुझाव दिया गया है लेकिन इसमें से कोई भी नरिणायक नहीं है।
- **प्रतीक भिन्नताएँ:** एसआर राव (1982) ने लिपि में 62 संकेत प्रस्तावित किये, लेकिन आगे चलकर असको परपोला (1994) ने 425 संकेतों का सुझाव दिया।
 - वर्ष 2016 में बरायन के. वेल्स ने 676 संकेत प्रस्तावित किये, लेकिन सटीक संख्या एवं उनके अर्थ पर बहस जारी रहने से भ्रम की स्थिति बनी हुई है।
 - **सीमति पुरातात्विक साक्ष्य: 3,500 हड़प्पा मुहरों का सीमति संग्रह**, अज्ञात स्थल तथा कलाकृतियों का क्षरण, इस लिपि के विश्लेषण में बाधक हैं।
- **तकनीकी बाधाएँ:** हालाँकि **आरटफिशियल इंटेलिजेंस (AI)** और **मशीन लरनिंग** का उपयोग किया जा रहा है, लेकिन सीमति डेटा सेट के कारण मौजूदा मॉडलों को सधु लिपि को समझने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। लघु शलिलेखों में पैटर्न की पहचान करना अभी भी एक महत्त्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

सधु लिपि को समझना क्यों महत्त्वपूर्ण है?

- **हड़प्पा सभ्यता की भाषा को जाने के लिये:** भाषा परिवार (द्रवडि, इंडो-आर्यन या अन्य) की पहचान करना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्राचीन भारत के भाषाई इतिहास पर मूल्यवान जानकारी प्रदान करेगा।
- **हड़प्पा संस्कृतिको समझने हेतु:** इसके स्पष्टीकरण से हड़प्पा की धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक मानदंडों और प्रशासन एवं शासन सहित सामाजिक-राजनीतिक संरचनाओं का पता लगाया जा सकता है।
- **ऐतिहासिक नरिंतरता:** हड़प्पा तथा उसके बाद की सभ्यताओं के बीच संबंध स्थापित करने से भारत के सांस्कृतिक और भाषाई विकास का पता लगाने में मदद मिल सकती है।
- **वैश्विक प्रासंगिकता:** लिपि का अध्ययन प्राचीन लेखन प्रणालियों, मानव संचार विकास और मेसोपोटामिया और उससे आगे के देशों के साथ अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान को समझने में महत्त्वपूर्ण होगा।

- इसकी व्याख्या से वैदिक प्रथाओं और द्रवड़ि या इंडो-यूरोपीय भाषाओं के साथ संभावित संबंधों का पता लगाया जा सकता है।

विश्व की प्रमुख सभ्यताएँ

मेसोपोटामिया, 4000-3500 ईसा पूर्व

- इसका उद्गम आधुनिक इराक और ईरान, सीरिया, कुवैत और तुर्की के कुछ भाग, टाइग्रिस और यूफ्रेट्स नदियों के बीच हुआ
- इसे सभ्यता के उद्गम स्थल के रूप में जाना जाता है
- अपनी लिपि, देवताओं और महिलाओं पर विचारों वाली संस्कृतियों का विविध संग्रह
- समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य को दर्शाते हुए, धर्म, कानून, चिकित्सा और ज्योतिष जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करने वाली अत्यधिक सम्मानित शिक्षा प्रणाली
- पुरुष तथा महिला दोनों विविध व्यवसायों में शामिल थे, जिनमें कृषि के साथ-साथ मुंशी, चिकित्सक, कारीगर, बुनकर, कुम्हार आदि जैसी भूमिकाएँ भी शामिल थीं।
- महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त थे और वे जमीन की मालिक भी हो सकती थीं, तलाक के लिये याचिका लगा सकती थीं, आदि
- मीनारों, सीढ़ीदार पिरामिड मंदिरों के आसपास बसे हुए शहर के निवासी अपने संरक्षक देवता का सम्मान करते थे
- धूप में सुखाई गई ईंटों से निर्मित शहर, विश्व के पहले शहर थे।

प्राचीन मिस्र, 3100 ईसा पूर्व

- नील नदी के तट पर स्थित
- पिरामिडों, कब्रों और मकबरों के लिये सबसे अधिक जाना जाता है, जिसमें शवों को मृत्यु के पश्चात् के जीवन हेतु तैयार करने के लिये ममीकरण किया जाता है।
- इसने स्मारकीय लेखन और गणित प्रणालियों की विरासत छोड़ी
- सभ्यता 332 ईसा पूर्व में सिकंदर महान की विजय के साथ समाप्त हो गई

सिंधु घाटी सभ्यता, 3300 ईसा पूर्व

- यह आधुनिक भारत, अफगानिस्तान और पाकिस्तान में स्थित है
- अन्य प्राचीन सभ्यताओं की तुलना में अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण, व्यापक युद्ध के बहुत कम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
- संगठित शहर की योजना, एकसमान पकी-ईट वाले घरों, एक ग्रिड संरचना और जल निकासी, सीवेज और जल आपूर्ति प्रणालियों से परिपूर्ण
- 1800 ईसा पूर्व के आसपास इसका पतन हुआ, मृत्यु के पीछे के वास्तविक कारणों पर अभी भी परिचर्चा होती है (ये सिद्धांत पतन के लिये आर्य आक्रमण या जलवायु एवं प्राकृतिक कारणों को प्रस्तावित करते हैं)

प्राचीन चीन, 2000 ईसा पूर्व

- हिमालय पर्वत, प्रशांत महासागर और गोबी रेगिस्तान द्वारा संरक्षित, यलो और यांगत्ज़ी नदियों के बीच स्थित
- सदियों तक आक्रमणकारियों और अन्य विदेशियों से संघर्ष में फला-फूला
- सामान्यतः चार राजवंशों में विभाजित - ज़िया, शांग, झोउ और किन - प्राचीन चीन पर एक के बाद एक सम्राटों का शासन था।
- दशमलव प्रणाली, अवेकस और धूपघड़ी के साथ-साथ प्रिंटिंग प्रेस को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है
- बड़े पैमाने पर बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं के निर्माण के लिये आबादी को संगठित किया (मिस्रवासियों के समान)



???????? ???? ???? ????:

प्रश्न: सिंधु घाटी लपिको समझने में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण कीजिये और हड़प्पा सभ्यता को गहराई से समझने के क्रम में इसके नहितार्थों का परीक्षण कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, पछिले वर्ष के प्रश्न (PYQs)

????????????

प्रश्न. सिंधु घाटी सभ्यता के संबंध में नमिनलखित कथनों पर वचार कीजिये: (2011)

1. यह मुख्य रूप से एक पंथनरिपेक्ष सभ्यता थी। हालांकि, यहां धार्मिक तत्व मौजूद थे लेकिन वे बहुत प्रभावी नहीं थे।
2. इस काल में भारत में कपास का उपयोग वस्त्र निर्माण के लिये किया जाता था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

प्रश्न. नमिनलखित में से कौन सिंधु सभ्यता के लोगों की विशेषता/विशेषताएँ बताता है? (2013)

1. उनके यहाँ विशाल महल और मंदिर थे ।
2. वे मातृदेवताओं और पतिदेवताओं दोनों की पूजा करते थे ।
3. उन्होंने युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथों को नयोजति किया था ।

नीचे दिये गए कूट का उपयोग करके सही कथन/कथनों का चयन कीजिये:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) 1, 2 और 3
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (b)

??????

प्रश्न 1: भारत की प्राचीन सभ्यता मिस्र, मेसोपोटामिया और ग्रीस की सभ्यताओं से इस बात में भिन्न है कि भारतीय उपमहाद्वीप की परंपराएँ आज तक भंग हुए बिना परिरक्षित की गई हैं । टिप्पणी कीजिये । (2015)

प्रश्न 2: सधु घाटी सभ्यता की नगरीय आयोजन और संस्कृति ने कसि सीमा तक वर्तमान युगीन नगरीकरण नविश (इनपुट) प्रदान किये हैं? चर्चा कीजिये । (2014)

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/deciphering-the-indus-valley-script>

